"निलय उपाध्याय की काव्य संवेदना"

-रवीन्द्रनाथ मिश्र

युवा कवि निलय उपाध्याय ने अपनी माटी, अपनी जनता और अपनी भाषा से जुड़कर अष्टभुजा शुक्ल, बोधिसत्व, एकान्त श्रीवास्तव आदि की भांति हिंन्दी कविता को आंचलिकता से जोड़ा। भोजपुर जनपद के दुल्लहपुर गांव में 28 जनवरी 1963 में जन्में उपाध्याय बिहार सरकार के एक सरकारी अस्पताल में फार्मेस्टि हैं। अभी तक उनके 'अकेला घर हुसैन का' और 'कटौती' नामक दो काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम संग्रह के कवर पृष्ठ पर परमानंद श्रीवास्तव ने लिखा – " हिंदी की एकदम नयी पीढ़ी के जिन कवियों ने लोक रंग का प्रगाढ़ उपयोग करते हुए खांटी आंचलिक संवेदना को अपने समय के यथार्थ की पहचान के लिए मूल्यवान आधार बनाया है उनमें निलय उपाध्याय का नाम जाना – पहचाना है। ये वे कवि हैं जिनकी गहरी स्थानीयता काव्यवस्तु के चयन और निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आरा, गुना, विलासपुर, इलाहबाद कहते ही इन कवियों की पहचान आज की कविता के पाठकों के मन में बनने लगती है। यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं।"

'अकेला घर हुसैन का' संग्रह की कविताओं से गुजरने पर लगा कि इन्होंने भी अपने आसपास के जीवन की संवेदनाओं को प्रकृति और लोकमाटी के रंग में रंगकर चित्रित किया है। उनमें जहां विचार, भाव और भाषाशिल्प का वैविध्य है, वहीं जीवन, प्रकृति और लोक का अदभुत समन्वय है। तैरने के पहले की अनुभूतियां, सफर का दृश्य और उसमें मकई के दाने की तरह खड़े और बैठै लोग, (नई उपमा और बिंब का प्रयोग), जेठ के एक दिन का अनुभव, पश्चिम के पहाड़ की तरह भारी दुःख और धूप में मदार की रूई की तरह उड़ने वाला वेतन, घर में सांप निकलने पर घर की भयावह स्थिति आदि जैसी अनुभूतियों और स्थितियों का अपनी रचनाओं में बयान करते हुए कवि ने 'यह छोटी सी खुशी' कविता में भागलपुर के साम्प्रदायिक दंगों में राहत शिविर में बच्चे को जन्म देकर चल बसी मां की स्मृति का मार्मिक वर्णन किया है। इसे पढ़कर 26 नवम्बर 2008 को मुंबहई में हुए आतंकवादी हमले में मां – बाप की मृत्यु के बाद जीवित नन्हीं बच्ची की याद ताजा हो उठती है।

खून में लिपटी दहक रही है नवजात देह/उस मां के कोठ से जुड़ा हिल रहा है,

नाभि का सिरा/जिसे किसी डाक्टर ने नहीं/इस देश की राजनीति में मृत घोषित किया है,

अब कौन चमाईन काटेगी नार/कौन नाईन तेलवान करेगी

कौन बामन देखेगा पता/कौन गोतिन देवता जगाएगी

कौन पिलाएगए दूध/जब रिश्ते ही नहीं बचे – कहां बचा कोई धरम

हत्याएं / हर पल हत्याएं / हर दिन हत्याएं / कितनी और जाने कितनी हत्याएं

अब तो आदत सी हो गई है सुनने की/यह नवजात के आने की खुशी है

कि याद आ रहे हैं दुःख।

कवि ने सत्ता, राजनीति, जन्म संस्कार, जाति – वर्ण आतंक, हत्या आदि के संदर्भ में मानवीय संवेदना को व्यक्त किया है। संग्रह की शीर्षक कविता भी साम्प्रदायिक आग की भयावहता से डरे हुए हुसैन भाई है, जिनका कि उस कुनबे में अकेला घर है। 'अपना मोर्चा' और 'वापस आ जाओ' कविता में आपस के प्रेम और सदभाव पर जोर दिया गया है, क्योंकि आने वाला भविष्य इतना खतरनाक होगा कि हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते।

निलय उपाध्याय की प्रगतिशील – दृष्टि भी जगह – जगह मुखरित हुई है। 'भूमिगत आग' में जहां कोयले की खान में झुलस रहे मजदूरों और उनके परिवार का हृदय विदारक चित्रण किया गया है, वहीं पर 'मंत्रीजी मेरे गांव आना' और 'सचिवालय गेट पर खड़े लड़के' कविता में सत्ता व्यवस्था के षडयंत्र का

खुलासा किया गया। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी सत्ता हस्तांतरण का वही नाटक आज भी जारी है।

बीतते जाएंगे दशक दर दशक / सदियां बीत जाएंगी
और यूं ही खड़े रहेंगे / सचिवालय गेट पर खड़े लड़के
राज सत्ता चाहती है बूढ़े हो जायं लड़के / धुंधली हो जाय उनकी स्मृति
ताकि सुरक्षित रहे / सुरक्षित रहे राजा की नींद
सुरक्षित रहे योजनाओं की आड़ में / राजा का भविष्य
और सुरक्षित रहे हर दशक में / जवान लड़कों की मौत। 2

कवि अपनी कविता 'अगला गणतंत्र' आने पर भी अफसोस करता है, क्योंकि उसे मालूम है कि स्थितियों और मूल्यों में कोई परिवर्तन नहीं होगा। सत्ताभोगी सत्ता की मादकता को चख लेने के बाद वह किसी भी कीमत पर उसे छोड़ना नहीं चाहता। उसका मद उसे बुरे से बुरे काम करवाता है, जहां मूल्यों की कोई महत्ता नहीं रह जाती।

राननीति और राजनीति के बीच दूरी बढ़ रही है / शब्द अर्थ खो रहे हैं,
एक सिरे पर यमदूत खड़े हैं दूसरे पर कुबेर / कोई नायक नहीं इस वक्त
कोई मुद्दा, कोई मूल्य नहीं / देह को ढीला छोड दो – लेट जाओ पेट के बल
कीचड़ में चलने के कायदे ही काम आते हैं ऊंचाईयों पर। 3

आजादी के कुछ वर्षों बाद राजनीति का वास्तविक अर्थ ही बदल गया। वह देश ओर समाज के हित से हटकर संकीर्ण स्वार्थों तक सीमित हो गई। सत्ता प्राप्ति के लिए धन और बल का सहारा लेते हुए परिवारवाद को बढ़ावा दिया गया। फलस्वरूप मूल्यों के विघटन की प्रक्रिया शुरू हुई। वर्तमान संदर्भ में धर्म और मूल्यों की बात करना अधिकांश लोगों को नागवार लगता है। एक समय था जब किसी राष्ट्र का मूल्यांकन वहां के जन – समाज के आचरणगत मूल्यों के आधार पर ही होता था।

मंचीय कवियों की कविता पर व्यंग्य करते हुए निलय 'दिल्ली का कवि' कविता में कवि द्वारा अपनी कविता की प्रशंसा इस तरह से करता है कि आने वाली कई सदियां उसे याद करेंगी। ''सांवे के दानों की तरह / सात छिलकों के भीतर होगी मेरी संवेदना / पंख खुजलाते कौवे की तरह सघन / और कलात्मक संवेग / कभी समझ में न आने वाली परेशानियों की तरह / बिम्बों से भरी पंक्तियां मेरी पहचान है। 4

लोक जीवन के चितेरे नागार्जुन की 'अकाल और उसके बाद' की याद दिलाती हुई कवि का कविता 'भात पकने का गीत' भूख और चावल पकने का सुन्दर बिंब खड़ा करती है। 'ताल दे रहा है अदहन / डमक – डमक नाच रहे हैं चावल / कलसे कुछ नहीं खाया बच्चों ने – कटोरा बजा रहे हैं / खाली कटोरा – खाली हाथ बड़े – बड़े कौर उठा रहे हैं / बच्चे गा रहे हैं भात पकने का गीत। 5 यहां कवि ने भूख, अभाव और गरीबी को उल्लेखित ढंग से व्यक्त किया है। गरीबी को संघर्ष और आनंद के साथ झेलने का सुख कुछ और ही होता है। कवि ने बचपन की मौजमस्ती को अपने मित्र हरिकिसुना में देखा था लेकिन वही बेचारा। हरिकिसुना अभाव और गरीबी के कारण तीस वर्ष में ही बूढ़ा दिखाई देने लगता है। यह सही है कि पहले के बचपनावस्था में खेल – कूद के अंदर न्याय – अन्याय, चोरी – चमारी, लडाई – झगड़ा, प्रेम – मस्ती का अपना अलग रंग होता था। आज वह हमारे जीवन से कोसों दूर है। कवि ने दुःख और गरीबी का जिक्र अपनी कविताओं में कई जगह किया है' पापा। पहाड़ हैं दुःख के / मम्मी रोग का घर / मुन्ने हंसना।

6

'बोझे में सिर, गांठ गलत पड़ रही रस्सी की' शीर्षक के अंतर्गत 'सेंहुड का कांट', 'काव का कवच', 'धान का कटोरा' सरसों का पौधा', लोकजीवन की संदेवनाओं से जुड़ी कविताएं हैं, जिनमें कृषक जीवन की स्सकृति के विविध चित्र हैं। 'मकई के खेत में : कुछ चित्र' कविता के अंतर्गत दस चित्र हैं, जिनमें कवि ने मकई का मानवीकरण करते हुए प्रकृति और लोकसंस्कृति के अद्‌भुत चित्र खींचे हैं।

मकई के खेत में / सूरज / किसान की पीठ पर झुक गया है।

सधे हाथों / खुर्पी की धार तलाशती है / मकई की खुराक खाती / घास

पेड / बाहें फैलाकर / रोक लेते हैं धूप / और हवा हर बार उन्हें / दूर धकेल देती है। 7

नंदकिशोर नवल ने लिखा है – निलय अपने ठाट में पूरे किसान कवि हैं, जो किसानी सरलता और तीक्ष्णता दोनों से स्वाभाविक रूप से युक्त है। उनकी अन्य विशेषता यह है कि स्थान – बोध के साथ उनमें प्रबल काल – बोध भी है, जिसमें वे अपने परिवेश का साक्षात्कार काफी बदले हुए रूप में करते हैं। 8

''मालवा स्ट्रीट'' की आगामी योजनाएं -

– ***''मालवा स्ट्रीट''*** द्वारा कवियों को पुरस्कार देने हेतु कवियों की कृतियां आमंत्रित की जाती है। पुरस्कार स्वरूप 1100 / 500 / 400.00 / रूपये की राशि प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार के रूप में प्रदान की जाना है। घोषणा दिसम्बर के अंक में की जावेगी। कृतियों की दो प्रतियां 31.08.09 तक आमंत्रित है। निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम होगा। इस बारे में कोई पत्राचार नहीं किया जावेगा। पुरस्कृत रचनाकारों का सम्मान ***''मालवा स्ट्रीट''*** द्वारा किया जावेगा। जिसमें ''साहित्यक मनीषी'' के सम्मान से विभूषित किया जावेगा।

– ***''मालवा स्ट्रीट''*** की दूसरी योजना के अंतर्गत नवोदित एवं पुरानी पीढ़ी के भूले विसरे कवियों को एक मन्च प्रदाय करने के लिये एक काव्य संग्रह सामूहिक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें हर कवियों की दो रचनाये एवं समीक्षक की टिप्पणी रहेंगी। जिसमें कवि के लेखन की श्रेष्ठता प्रतिपादित की जावेगी। अंक दिसम्बर 09 तक छप जायेगा। इस हेतु सहयोग राशि 300.00 रुपये बैंक ड्राफ्ट, धनादेश द्वारा सम्पादक लक्ष्मीनारायण ''शोभन'' नई सड़क, गुना के पते पर भेजें। छपने के बाद उतने ही मूल्य की आपको प्रकाशन की प्रतियां रजिस्टर्ड डाक से भेजी जावेंगी।

– ***''मालवा स्ट्रीट''*** में साहित्यिक लेखों, उत्कृष्ट रचनाओं, कहानियों, कविताओं व्यंग्य, संस्मरणों का प्रकाशन सदैव रहे, इसके लिये रचनाओं का स्वागत है। रचनाएं संक्षिप्त हों, कागज के एक ओर टंकित हों। अस्वीकृति का कोई नियम नहीं। पता लिखा, टिकिट लगा लिफाफा आने पर ही रचनाएं वापिस की जा सकेंगी, रचनाओं की मूल प्रति अपने पास सुरक्षित रखें।

ग्राहकों से निवेदन - कृपया ''मालवा स्ट्रीट'' के ग्राहक स्वयं बनें तथा मित्रों को भी बनायें, सदस्यता शुल्क वार्षिक 250.00, मासिक 20.00 रुपये होगा। बैंक ड्राफ्ट या धनादेश के द्वारा भेजें। सदस्यता के लिये अपना नाम / पूरा पता / पिनकोड नम्बर / स्थान आदि सभी का व्यौरा लिखें। पता है – सम्पादक – ''मालवा स्ट्रीट'' नई सड़क, गुना म.प्र. 473001

विज्ञापन दरें – कवर पेज चार 5000 रुपये, कवर पेज तीन 4000 रुपये, कवर पेज दो 4000 रुपये भीतर के पृष्ठ पूरा 1000 रुपये आधा पेज 500 रुपये, आजीवन ग्राहक 5000 रुपये संरक्षक – 10,000 रुपये।

संग्रह के अंत में 'औरत का ग्रहण कभी उग्रह नहीं होता' शीर्षक में मां, बहन, बेटी, पत्नी आदि नारी जीवन से जुड़ी विभिन्न संवेदनाओं को व्यक्त किया गया है। मैट्रिक पास रामकली द्वारा मताधिकार, गनेश का पत्नी प्रेम, रधिया का भाई के प्रति प्रेम, पति का पत्नी के प्रति पेम, बेटी विदा करते समय मां की सीख आदि प्रसंगों को कवि ने नारी चेता और परंपरा घोषित लोकसंवेदनाओं के साथ व्यक्त किया है। 'मां' जहां परंपरा का पालन करती हुई कहती है – 'सास बोले/बज्जर हो जाना/ससुर बोले तो पृथ्वी/देवर को मजाक में टालना/पति की हर बात की बलैया लेना .... मक्खन की डली/गोभी के फूल सी मेरी बेटी/भीतर कभी आग लगे... तूफान के झोंके आएं/तो मेरी बात जरूर याद करना/कि अच्छा नहीं होता/औरत के मुंह में दांत होना।' 9 वहीं पर गनेश पत्नी को डाक द्वारा सरेआम प्यार का इजहार करता है और रामकली ससुराल में घर की मर्यादाओं का उल्लंघन कर वोट डालती है।

हाय राम/लीप पोत दिया अपना सारा गुन
नाक कटवा दी ससुर की/पति ने मना किया – नहीं मानी
अकेले निकली/और सैंकड़ों मर्दों के बीच डाल आई अपना वोट
खासकर इस गांव में/जहां औरतों ने कभी वोट नहीं डाला
यह तो गजब कर दिया/रामकली ने। 10

यह बात सभी को विदित है कि हमारे भारतीय समाज में नारी और दलितों की स्थिति सदियों से दयनीय रही है। अंतिम दशक के दौरान स्त्री – दलित विमर्श विचार धारा ने कांति का स्वरूप धारण किया फलस्वरूप नारी और दलितों ने क्रमशः पुरूष और संवर्ण के अत्याचारों का विरोध करना शुरू किया। इससे पुरानी पीढ़ी में ही नहीं अपितु परंपरा घोषित नई पीढी में भी बौखलाहट शुरू हो गई, जोकि आज भी जारी है।

21वीं सदी के प्रस्थान बिन्दु पर तकनीकी संस्कृति और बाजारवाद के प्रभाव से आतंकित और विलुप्त होती हुई किसानी संस्कृति से दुःखी निलय उपाध्याय 'कटौती' काव्यसंग्रह की कविताओं में मनबोध बाबू से परती समय में सूखते हुए जीवनरस एवं मूल्यों के लिए तड़प उठते हैं। बाजारवाद के बढ़ते हुए प्रभाव से कवि भलीभांति परिचित हैं। वह आज हमारे गांव के गली कूचों तक अपना पांव पसार चुका है। बाजारवाद मूल्यों की फिकर नहीं करता। उसे तो बस केवल अपना लाभ ही दिखाई देता है। उसकी इस प्रवृत्ति को मीडिया द्वारा विशेष बढावा मिल रहा है। गांव मन के कवि निलय को यह सब रास नहीं आता। अरविंद त्रिपाठी का कहना है कि 'जाहिर है उनके पास काव्यानुभव की समृद्ध थाती है और वह समृद्ध थाती किसान संवेदना के कारण उपजी है। किसान जीवन के सुखों – दुखों, राग – विराग और उसके लोक – जीवन की जिंदगी की प्रामाणिक तस्वीरें निलय की कविता में खिंचीं पड़ी हैं। उनकी कविताओं की गहराई में उतरने के लिए भारत औसत किसान की संवेदना को समझना आवश्यक है। हाल के दशक में कृषि सभ्यता और किसान के जीवन में जो व्यापक परिवर्तन आए, उन पर बड़ी सूक्ष्म नजर है निलय की कविता में। उनका किसान कोई जमींदार ताल्लुकेदार किसान नहीं है, पंजाब का वह समृद्ध इंसान भी नहीं है जहां हर दरवाजे पर ट्रैक्टर खड़ा है। यह पूरब का थका – हारा निराश्रित, प्रकृति पर पूरी तरह आश्रित, व्यवस्था के जबड़े में फंसा हुआ वह वंचित किसान है जहां खेती करने के बावजूद बड़ी मुश्किल से दो जून का चूल्हा जलता है। 11

प्रस्तुत काव्यसंग्रह की प्रारंभिक तेरह कविताएं मनबोध बाबू को संबोधित करके लिखी गई हैं। जिनमें वर्तमान समय के प्रति पीडा और अतीत के प्रति मोह है। बाजारबाद के चलते कैसे जो सबकुछ अच्छा था वह तहस – नहस हो रहा है। यहां दो पीडियों के बीच गहरा आत्मीय, हृदयविदारक संवाद है।

"मनबोध बाबू,/तुम्ही से मैंने जाना कि जीवन का कोई विकल्प नहीं होता।/इस परती समय में कोई घड़ी वही वक्त नहीं देती।/तारीख नहीं देते/कैलेंडर।/कोई नायक, कोई मुद्दा, कोई मूल्य नहीं दिखाई देता।/आसमान की राह गुजरने वाली नदियों में कोई पाल दिखाई नहीं देता।... मनबोध बाबू। तुम मुझसे अहीं, मैं तुमसे कहूंगा।/ कहते – सुनते कम होते जाते हैं पृथ्वी के दुख। कठिन राह और कठिन रात ऐसे ही कटती है। ऐसे ही पकड़ में आता है सिर और शुरू होता है जीवन... ।12

कवि का दुख है कि विज्ञान, बाजार और व्यवस्था के चलते सुविधाओं के पीछे भागती हुई यह दुनिया मकड़ी की भांति अपने ही जाल में फंसकर दम तोड़ देगी। यह जीवन सूखे नारियल में पानी की भांति बचा रहेगा। डीजल – पंपों और मोबाइल से कान के परदे फटेंगे। घड़ी की रफ्तार पता नहीं कितनों का जान ले लेगी। वर्तमान तड़क – भड़क की संस्कृति में जीने के लिए मनुष्य रोजमर्रा के जीवन में प्रयुक्त वस्तुओं की कटौती पर कटौती करता ही जाएगा।

'दूध बंद कर देंगे हम/सरसों तेल एक किलो, आधा किलो डालडा/चाय सिर्फ एक बार, साबुन रविवार को/बच्चे बडे हो रहे हैं – स्कूल/पैदल जाएंगे/इच्छाओं की पचखियां छांटते जाएंगे/जरूरतों की शाखें काटते जाएंगे/नाप – तौल पर बनाएंगे/बजट।' 13

आजादी के बाद देश की अधिकांश जनता को दो वक्त का भोजन ठीक से नहीं मिलता था। आज वैसी स्थिति नहीं है फिर भी मध्यवर्ग आधुनिक भौतिक सुविधाओं के पीछे भागते हुए दिखावटी जीवन हेतु तथा औसतन भारतीय किसान और मजदूर वर्ग रोजमर्रा की जिंदगी को चलाने के लिए घरेलू बजट में किसी न किसी रूप में कमी करता है।

लोक जीवन के त्यौहारों की घटती हुई महिमा और सिनेमाई संस्कृति के प्रवेश को कवि ने 'इस बार छठ में' कविता में सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। आगे की 'छह सौ रुपयों में......', 'नरकट', 'एक बार फिर', 'अगला पाठ', 'सबक' आदि कविताओं में कवि मनबोध बाबू से बाजारवाद की संस्कृति से तबाह होती हुई जिंदगी से ऊब कर मानवीयता की पुकार करता है।

इच्छाओं की/कभी खत्म न होने वाली होड से अलग
नैतिकता और प्यार का कारोबार है ये दुनिया
नैतिकता और प्यार की संतान है/हम/और तुम
मनबोध बाबू/सचमुच अच्छा लगता है
बच्चों की तरह विस्मय के साथ समझना/जीवन का हर अगला पाठ
दिन – ब – दिन की तल्लीनता से करना प्यार/ और जिंदा रहना साथ – साथ। 14

प्रस्तुत संग्रह की तरह कविताओं में कवि ने समय और समाज की विसंगतियों, विडंबनाओं और निजी संवेदनात्मक अनुभूतियों को मनबोध बाबू को संबोधित करके व्यक्त की है। इसके आगे की 'तीन जन' 'स्वस्तिक' और 'कारागार' कविताएं आजादी के पचास साल बाद देश की संसद, संविधान, चुनाव आदि से जुड़ी हैं।" मुझे क्षमा कर देना मित्रों/चालीस प्रत्याशियों, चालीस प्रतीक चिन्हों से लदे/इस मत – पत्र में खाली है वह जगह/जहां रोप सकूं मैं अपना पवित्र/स्वस्तिक।" 15 मध्यकाल में कबीर अपने समय और समाज को देखकर रोया था, तब उस समय की परिस्थितियां भिन्न थीं। 'देख कबीरा रोया' कविता में कवि ने इस बात की ओर इंगित किया है कि आज लोकतंत्र में हिंसा, अपहरण, मारकाट, बलात्कार आदि जैसी कुछ ऐसी परिस्थितियां हैं कि कबीर होते तो जरूर रोते। 'कोई खोल ले गया दरवाजे पर बंधी गाय/कोई उठा ले गया स्कूल से लोटता बच्चा/किसी ने अस्मत लूटी/किसी ने जला दी दुकान। 16"

'कविता का भविष्य, भविष्य की कविता' नामक लेख में स्वप्निल श्रीवास्तव लिखते हैं" आज के यथार्थ का चेहरा रक्तरंजित और अमानवीय हे। यथार्थ हमारे सामने विस्मयकारी दृश्य प्रस्तुत करता है जो कल्पनातीत हैं। बाबरी मस्जिद का ध्वंस, अमेरिका के सर्वशक्तिमान होने का मिथक का टूटना, गुजरात में हिन्दुत्व की प्रयोगशाला बनाकर दंगों का सरकारी प्रायोजन किया जाना, ऐसे दुस्वप्न हैं जिन्होंने अन्तरराष्ट्रीय मानस को विचलित किया है।" 17

'खैनी की डिबिया' 'आहटें' 'जड़ों की ओर' 'बौर' 'हरित – महादेव' 'लेखन उत्साद' 'बारिश' 'छींक' 'ठोरा' 'रोता हुआ बच्चा' 'मैं गांव जाऊंगा' 'दियारे की लड़की' आदि कतिवाएं प्रकृति, प्रेम, लोक संस्कृति एवं ग्रामीण बोध की विभिन्न संवेदनाओं की कविताएं हैं।

और तुम भी अजीब थी सांवली / साडी संभालती दुहरी हो गई थी
लाजवंती के पौधे – सी / सुबह के आकाश का सारा सिंदूर तुम्हारे चेहरे पर
फैल गया था / और तुम्हारे शोख कदम कुछ ऐसे बढ़े थे
जैसे कोई नवगंछुली उसम के बाद / मेघ मना रही हो... । 18

कवि एवं कहानीकार उदय प्रकाश ने कटौती काव्यसंग्रह के कवर पृष्ठ पर लिखा है' कसौटी की कविताएं उस परिवर्तित होते लोक के दैनिक जीवन – प्रसंगों की कविताएं हैं जहां प्रकृति प्रोद्यौगिकी से, श्रम बाजार से, पगडंडियां राजमार्गों से, अन्न सिक्कों और नगदी से, हवा विषाक्त रासायनिक गैसों से और जातीयताएं आकांता विजातीयताओं से एक रोमांचक नियामक संघर्ष में निमग्न है। इन कविताओं में सुदूर जंगलों, पहाड़ों और गांव – देहातों से बचकर लाई गई तेज पत्ते की वह दुर्लभ वन – गंध है, जो निलय की कविताओं को एक विल्कुल नई पहचान देती है।"

सम्पर्क – डॉ. रवीन्द्र मिश्र,
अध्यक्ष हिन्दी विभाग गोवा विश्वविद्यालय
तालगांव पठार, गोवा – 403206

दूरभाष 0832 6519289
आवास – क 128 / 1–एच / 1,
22 आजाद को–ऑपरेटिव हाउसिंग
सोसायटी कुरका गोवा 403108
दूरभाष 0832 2218010